अध्याय 9

जनसंचार, सामाजिक परिवर्तन एवं सामाजिक आन्दोलन

अध्ययन बिन्दु : भाग I

- जनसंचार का अवधारणात्मक पक्ष
- जनसंचार की संरचना
- जनसंचार एवं सामाजिक परिवर्तन
- जनसंचार का महत्व

अध्ययन बिन्दु : भाग II

- सामाजिक आन्दोलन
- राजस्थान में बिजौलिया का किसान आन्दोलन
- राजस्थान में जनजातीय आन्दोलन (भगत आन्दोलन)
- राजस्थान में पर्यावरण आन्दोलन (खेजड़ली)
- अन्य सामाजिक आन्दोलन

प्रस्तुत अध्याय को दो भागों में विभाजित किया है। प्रथम भाग में जनसंचार एवं सामाजिक परिवर्तन की विवेचना करेंगे तथा दूसरे भाग में समाजिक आन्दलोनों के बार में चर्चा करेंगे। अध्ययन से आप जान पाएँगे कि–

- जनसंचार किसे कहते हैं? इसका अर्थ क्या है?
- जनसंचार को सामाजिक परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण पहलू क्यों कहा जाता है?
- सामाजिक आन्दोलन का अर्थ क्या है तथा इसके आवश्यक तत्व क्या होते हैं?
- राजस्थान के तीन महत्वपूर्ण आन्दोलनों के बारे में समझ पाएँगे।
- अन्य सामाजिक आन्दोलनों के बारे में संक्षिप्त जानकारी कर सकेंगे।

अब हम इस अध्याय के प्रथम भाग की विस्तृत विवेचना करेंगे। प्रारम्भ में यह स्पष्ट कर लेना आवश्यक है कि जन संचार और सामाजिक आन्दोलन सामाजिक परिवर्तन लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अर्थात् जनसंचार, सामाजिक आन्दोलन और सामाजिक परिवर्तन इन तीनों में अन्तर्सम्बन्ध है। ये तीनों ही एक दूसरे पर निर्भर भी हैं। हम यह कह सकते हैं कि सामाजिक परिवर्तन के विभिन्न आयामों की विवेचना में संचार और सामाजिक आन्दोलन का अपना महत्व है।

जनसंचार एक माध्यम है जिसके द्वारा संदेश, सूचना एवं विचार आमलोगों तक पहुंचते हैं इससे प्रभावित होकर लोग सामाजिक आन्दोलन के प्रति जागरूक होते हैं। साथ ही सामाजिक आन्दोलन जब घटित होते हैं तो इनके परिणाम को हम सामाजिक परिवर्तन के रूप में देखते हैं। इसी बात को हम दूसरे शब्दों में भी प्रकट कर सकते हैं।

अर्थात् सामाजिक परिवर्तन लाने के लिये किसी महत्वपूर्ण मुद्दे के बारे में जनसाधारण की भागीदारी आवश्यक होती है। इस भागीदारी के लिए लोगों से सम्पर्क करना आवश्यक हो जाता है। यह बात भी महत्वपूर्ण है कि सम्पर्क प्रत्यक्ष भी हो सकता है अथवा अप्रत्यक्ष भी, लेकिन बिना सम्पर्क के भागीदारी असंभव हो जाती है।

वर्तमान में तो विद्वान और प्रौद्योगिकी ने जन सम्पर्क एवं जनसंचार के साधनों में क्रान्तिकारी बदलाव करके इनकी गति को बहुत ही तीव्र कर दिया है। जनसंचार की गति अब वैश्विक स्तर की है। कुछ ही क्षणों में सभी प्रकार के संदेश, सूचनाएँ एवं विचारों को सर्वत्र प्रेषित किया जा सकता है। जब जनसंचार की गति इतनी तीव्र हो गई है तो सामाजिक आन्दोलन भी न्यूनतम समय में अपना प्रभाव प्रकट कर देते हैं। हम यह भी कह सकते हैं कि जनसंचार के साधन सामाजिक परिवर्तन के वाहक हैं। अतः जनसंचार, सामाजिक आन्दोलन और सामाजिक परिवर्तन अन्तर्सम्बन्धित प्रघटनाएं हैं।

सबसे पहले हम जनसंचार के अवधारणात्मक पक्ष को समझने का प्रयास करेंगे।

जनसंचार का अवधारणात्मक पक्ष

जब कोई संदेश या समाचार किसी माध्यम से आमजन तक पहुंचाया जाता है, तो इसे जनसंचार कहा जाता है। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से जनसंचार एक सामाजिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा सूचनाओं, संदेशों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाया जाता है।

जार्ज सीमेल ने जनसंचार की अवधारणा की व्याख्या करते हुए लिखा है कि जनसंचार के ये साधन उन लोगों के मूल्यों और मनोवृत्तियों को प्रभावित करते हैं जो इनका प्रयोग करते हैं दूसरी ओर आम लोगों के मूल्य एवं उनकी मनोवृत्तियाँ भी जनसंचार के साधनों को प्रभावित करते हैं। लारसेन ने जनसंचार का अर्थ स्पष्ट करते हुए लिखा है कि किसी अवैयक्तिक साधन से अपेक्षाकृत बहुत से जनों को एक ही समय में किसी संदेश का प्रेषण। ये सभी अवैयक्तिक साधन तकनीक (प्रेस, रेडियो,

टेलीविजन, सिनेमा) से सीधे ही अपने श्रोताओं, पाठकों और दर्शकों को अपना संदेश देते हैं। ये संदेश नियमित भी होते हैं और तात्कालिक भी।

जनसंचार साधनों के लिए तीन बातें महत्वपूर्ण हैं–

(1) दिये जाने वाले संदेश के प्रति लोगों का ध्यान आकृष्ट हो (2) अपेक्षा के अनुसार ही लोग संदेश को और (3) लोग उस संदेश के बारे में अपनी प्रतिक्रिया देने में सक्षम हों।

जनसंचार की अवधारणात्मक विवेचना से स्पष्ट है कि जनसंचार एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है, इससे आम लोगों को वैचारिक रूप से प्रभावित किया जा सकता है। उनकी मनोवृत्तियों एवं व्यवहारों में भी परिवर्तन की अपेक्षा की जा सकती है।

जनसंचार की संरचना– जनसंचार की क्रिया को हम व्यवस्थित रूप में समझने के लिये इसकी संरचना की चर्चा करेंगे। जनसंचार की भी एक विशिष्ट संरचना होती है। इस संरचना का निर्माण विभिन्न इकाइयों से होता है। जनसंचार की पहली इकाई स्रोत के रूप में होती है। स्रोत से तात्पर्य विचार की उत्पत्ति, घटना का घटित होना अथवा प्रकटीकरण। जैसे किसी धार्मिक उपदेशक द्वारा प्रवचन देना, राजनेता का भाषण, अलगाववादी का भड़काऊ बयान अथवा कोई अवाँछनीय अथवा असामाजिक कृत्य करना। ये सब जनसंचार के स्रोत कहे जाते हैं जो कि किसी विचार संदेश या समाचार का उत्पति स्थल है। यही जनसंचार की प्रथम इकाई है।

जनसंचार संरचना की दूसरी इकाई है संदेश जो कि प्रतीकात्मक हो सकता है अथवा भाषा के रूप में हो सकता है। इसे हम विषय वस्तु कहते हैं। यह किसी कथन के रूप में होता है अथवा प्रत्यक्ष घटित होने वाली घटना हो सकती है। जैसे प्रवचन में सामाजिक मूल्यों की बात करना, प्रेरक प्रसंग सुनना, राजनेता के भाषण में भावी कल्याणकारी योजनाओं का उल्लेख करना हो सकता है। इसी प्रकार किसी समुदाय विशेष के प्रति टिप्पणी करना, हिंसा के लिये भड़काना, किसी के साथ अभद्र व्यवहार एवं मारपीट करना, कानून को हाथ में लेकर अराजकता फैलाना आदि। ये सभी उदाहरण एक संदेश के रूप में हैं। अर्थात् जनसंचार संरचना की दूसरी इकाई है।

अब तीसरी इकाई की चर्चा करें जो कि गंतव्य अर्थात लक्ष्य के रूप में है। गंतव्य अथवा लक्ष्य से तात्पर्य उस जनसमूह से है जिसके लिए संदेश प्रेषित किया तथा जिसके लिए विचार उत्पन्न हुआ। हम इसे यूं समझें कि स्रोत से चलकर संदेश के माध्यम से लक्ष्य की ओर पहुँचना। जनसमूह के विचारों, क्रियाओं, अन्तर्क्रियाओं और व्यवहारों को प्रभावित कर देना, उनमें परिवर्तन लाने के लिए उन तक पहुंचा देना ही जनसंचार है जो कि क्रमशः तीन इकाइयों से निर्मित होता है।

जनसंचार के संरचनात्मक पक्ष को निम्न प्रकार से समझ सकते हैं–

स्रोत–	संदेश–	लक्ष्य/गंतव्य
विचार, आदेश,	विषयवस्तु	जनसमूह तक पहुंचना
घटनाक्रम	प्रत्यक्ष घटना	पढ़ना/देखना
	अखबार में प्रकाशन	
	टीवी पर प्रसारण	

जनसंचार एवं सामाजिक परिवर्तन

संचार मानव समाज की उत्पत्ति के बाद सामाजिक अन्तर्क्रियाओं एवं सामाजिक सम्बन्धों के आधार पर विकसित होने वाली एक प्रक्रिया है।

मानवीय अन्तर्सम्बन्धों के विविध स्वरूपों के साथ जनसंचार के साधनों का विकास होता रहा है, लेकिन विज्ञान और प्रौद्योगिकी ने जनसंचार के साधनों में क्रान्तिकारी परिवर्तन कर इन्हें अत्यधिक उन्नत कर दिए हैं।

यदि हम संचार के साधनों के विकास का क्रम देखें तो ज्ञात होता है कि सबसे पहले छापाखाने (प्रिन्टिंग प्रेस) का आविष्कार हुआ। इसके द्वारा संदेश, सूचना एवं विचार को पुस्तकों, पत्रिकाओं एवं समाचार पत्रों के माध्यम से आमजन तक पहुंचाने के प्रयास हुए। इसे प्रिन्ट मीडिया कहा जाता है। इसमें भी तकनीकी के विकास के साथ अनेक परिवर्तन हुए। आज तो छापने की तकनीक इतनी विकसित हो चुकी है कि कम से कम समय में अधिकतम सामग्री को प्रकाशित किया जा सकता है।

प्रिन्ट मीडिया के बाद इलेक्ट्रॉनिक मीडिया है। इसके अन्तर्गत सबसे पहले रेडियो ही इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का साधन था, लेकिन विज्ञान और प्रौद्योगिकी ने 20वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में भी नई–नई तकनीक से नये–नये साधन विकसित कर दिये। टेलीविजन इनमें एक महत्वपूर्ण साधन था। इसके बाद 21वीं सदी अपने साथ इलेक्ट्रॉनिक्स, कम्प्यूटर और संचार को और अधिक विकसित एवं व्यापक स्तर पर ले आई। आज हम संचार के जिन साधनों का प्रयोग करते हैं इनमें इन्टरनेट सबसे अधिक सशक्त साधन है।

वैश्विक स्तर पर आर्थिक दृष्टि से कुछ देश विकसित हैं कुछ विकासशील हैं और कुछ विकास की दौड़ में पीछे हैं, लेकिन संचार की दृष्टि से तो अब लगभग सभी देश एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। हम परिवर्तन की चर्चा करेंगे, तो कई क्षेत्रों में सामाजिक परिवर्तन की गति में अब इतना अन्तर नहीं रह गया है।

जनसंचार का महत्व– जैसा कि हम स्पष्टतः कह सकते हैं कि सामाजिक परिवर्तन के साथ जनसंचार के साधन भी जुड़े हुए हैं। अतः जनसंचार के साधन सामाजिक परिवर्तन के लिये महत्वपूर्ण हैं। इसी कारण से जनसंचार के साधनों का अध्ययन समाजशास्त्र के विद्यार्थियों के लिए भी आवश्यक है।

पूर्व के अध्यायों में आपने सामाजिक सांस्कृतिक परिवर्तन की अवधारणाओं एवं अन्य पहलुओं को समझा है। इसी क्रम में यह भी समझ में आ गया कि मानवीय क्रियाएँ और अन्तर्क्रियाएँ ही सामाजिक–सांस्कृतिक परिवर्तन का आधार होती हैं। अर्थात् मानवीय क्रियाओं और

अन्तर्क्रियाओं को संचार माध्यम प्रभावित कर सकते हैं। इसमें परिवर्तन भी ला सकते हैं। हम यह भी कह सकते हैं कि मानवीय व्यवहारों को संचार के साधन प्रभावित कर रहे हैं।

हमारा देश सांस्कृतिक विविधता वाला देश है। एक स्थान पर घटित होने वाली घटना समूचे देश को प्रभावित कर देती है। इसका कारण केवल संचार माध्यम है। संचार माध्यम भावनाओं को उकसाने में भी अपनी भूमिका निभाते हैं और राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ करने के लिए संदेश और समाचार प्रेषित करते हैं। देश में स्वतंत्रता आन्दोलन चला था उस समय सम्पूर्ण देशवासियों में राष्ट्रभक्ति की भावना को जागृत करने में संचार साधनों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी थी। समसामयिक राष्ट्रहित विषयों पर भी कई बार वैचारिक भिन्नताएँ देखने को मिलती हैं। संचार साधनों से आमजन भी अपनी धारणाओं को बदलकर उचित दिशा में परिवर्तन का निर्णय लेते हैं।

संचार साधनों की भूमिका का महत्व निरंतर बढ़ता जा रहा है। एक तरफ नकारात्मक विचार, समाचार या संदेश संचार माध्यमों से प्रसारित होते हैं, तो दूसरी तरफ सकारात्मक विचार, समाचार या संदेश भी प्रसारित होते हैं। सामाजिक परिवर्तन तो दोनों ही स्थितियों में आता है। क्योंकि सामाजिक परिवर्तन अवश्यंभावी है अत: संचार के महत्व को भी देश, काल और परिस्थिति के आधार पर समझा जाता है।

सामाजिक आन्दोलन

सामाजिक परिवर्तन के कारणों और प्रभावों के सन्दर्भ में सामाजिक आन्दोलन एक महत्वपूर्ण प्रघटना है। समाज में जब कई लोग इच्छित परिवर्तन लाने के लिए सामूहिक प्रयास करते हैं तो इसे सामाजिक आन्दोलन कहा जाता है। इस प्रकार के सामूहिक प्रयास से प्रचलित समाज व्यवस्था प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष से प्रभावित होती है।

सामाजिक आन्दोलन के अवधारणात्मक पहलू को अच्छी प्रकार से समझने के लिए हम इसके आवश्यक तत्वों की विवेचना करेंगे। उसके बाद राजस्थान में हुए कुछ उल्लेखनीय सामाजिक आन्दोलन एवं अन्य समाज सुधार आन्दोलन की चर्चा करेंगे।

सामाजिक आन्दोलन के आवश्यक तत्व

सामाजिक आन्दोलन को विस्तार से समझने के लिए इससे सम्बन्धित कुछ आवश्यक तत्वों के बारे में बताने का प्रयास करेंगे। ये सभी तत्व सामाजिक आन्दोलन की उत्पत्ति एवं इसकी प्रक्रिया को स्पष्ट करते हैं।

1. स्रोत– सामाजिक आन्दोलन का जन्म जिन परिस्थितियों अथवा दशाओं से होता है, उसे हम इसका स्रोत कहते हैं। सामान्यतया समाज में प्रचलित व्यवस्था को प्रभावित करने वाली परिस्थिति के प्रति असंतोष तथा उनके प्रति विरोध की भावना से जन आक्रोश उत्पन्न होने लगता है। प्रचलित व्यवस्था को सामूहिक रूप से चुनौती देने का प्रयास किया जाता है। साथ ही उस व्यवस्था को परिवर्तित करने की सामूहिक चेतना जागृत होने लगती है। सामूहिक प्रयास से उस परिस्थिति को बदलने के प्रति विश्वास उत्पन्न होने लगता है। यही सामाजिक आन्दोलन का स्रोत बन जाता है। इसी को हम सामाजिक आन्दोलन का एक आवश्यक तत्व कहते हैं।

2. विचारधारा– सामाजिक आन्दोलन का आधार एक विचारधारा होती है। विचारधारा ही सामाजिक आन्दोलन की परिस्थिति को समझती है, इसकी रूपरेखा प्रस्तुत करती है। विचारधारा के आधार पर सामाजिक आन्दोलन के उद्देश्य एवं उन्हें प्राप्त करने के तरीकों को प्रस्तुत किया जाता है। इसके प्रति विश्वास एवं निष्ठा के कारण लोगों में पारस्परिक समझ विकसित होती है तथा सामूहिक रूप से आन्दोलन हेतु प्रेरित होते हैं।

3. चमत्कारी नेतृत्व– सामाजिक आन्दोलन की विचारधारा को प्रभावी तरीके से आम लोगों तक संप्रेषित करने के लिए चमत्कारी नेतृत्व एक आवश्यक तत्व है। आन्दोलन के उद्देश्य के अनुसार अधिक से अधिक लोगों को साथ लेकर आगे बढ़ना नेतृत्व पर ही निर्भर करता है। आन्दोलन में जो अग्रणी नेता होता है। उसके प्रति लोगों में विश्वास एवं श्रद्धा उत्पन्न हो जाती है। इसी के फलस्वरूप वे उसके नेतृत्व को स्वीकार करते हैं, उससे दिशा-निर्देश प्राप्त कर सक्रिय हो जाते हैं।

4. कटिबद्ध अनुयायी– केवल चमत्कारी नेतृत्व से ही सामाजिक आन्दलोन सफल नहीं होते हैं। नेतृत्व को मान्यता प्रदान करने वाले कटिबद्ध अनुयायी ही सामाजिक आन्दोलन को सफल बनाते हैं। भिन्न-भिन्न कारणों से सामाजकि आन्दोलन का विरोध भी होता है। इसके संचालन में बाधायें आती हैं, लेकिन चमत्कारी नेतृत्व और कटिबद्ध अनुयायियों के कारण सभी प्रकार के अवरोध दूर करने के सामूहिक प्रयास सफल हो जाते हैं।

5. संगठन– विचारधारा, नेतृत्व और अनुयायी अन्त:र्निभर होते हैं। ये सभी तत्व एक साथ मिलकर संगठित हो जाते हैं इसी से सामाजिक आन्दोलन का एक महत्वपूर्ण तत्व, संगठन के रूप में दिखाई देता है। संगठन को सामाजिक आन्दोलन का केन्द्रीय तत्व कह सकते हैं। संगठन के माध्यम से आन्दोलन के उद्देश्य की ओर व्यूह रचना के अनुसार आगे बढ़ते हैं। नेतृत्व अनुयायी और संगठन के अभाव में आन्दोलन दिशाहीन होकर कमजोर पड़ जाता है।

6. व्यूह रचना– आन्दोलन से जुड़ा प्रत्येक तत्व महत्वपूर्ण होता है। इसी क्रम में सामाजिक आन्दोलन की व्यूह रचना भी अति आवश्यक होती है। व्यूह रचना एक प्रकार से सम्पूर्ण आन्दोलन को चरणबद्ध तरीके से संचालित करने की योजना है। इसमें आन्दोलनकारियों की माँगें, उन मांगों के प्रति अनुकूल निर्णय करवाने की योजना, आन्दोलन का विरोध होने पर निपटने की तैयारी, यदि आन्दोलन के दौरान किसी स्तर पर परिवर्तन करना हो तो उसका ब्यौरा एवं उद्देश्य प्राप्ति तक आन्दोलन की निरन्तरता को बनाये रखने के प्रावधानों को सम्मिलित किया जाता है। संक्षेप में सामाजिक आन्दोलन की व्यूह रचना सामाजिक आन्दोलन की

धूरी होती है। इसी के इर्द-गिर्द नेतृत्व एवं अनुयायी अपनी योग्यता एवं क्षमताओं का प्रदर्शन करते रहते हैं।

हमने सामाजिक आन्दोलन के जिन तत्वों की विवेचना की है ये सामाजिक आन्दोलन के विभिन्न घटक हैं। इन्हीं के आधार पर हम सामाजिक आन्दोलन के अवधारणात्मक पक्ष को अच्छी प्रकार से समझ सकते हैं।

अब हम चर्चा करेंगे विभिन्न प्रकार के सामाजिक आन्दोलनों की। आन्दोलन से पूर्व समाज की परिस्थिति, समस्याएं एवं व्यवस्थाएँ कैसी हैं। इन्हीं दशाओं के आधार पर सामाजिक आन्दोलन के उद्देश्य निर्धारित किए जाते हैं तथा सामाजिक आन्दोलनों को सामाजिक परिस्थितियों की प्रकृति के अनुसार वर्गीकृत किया जाता है। सभी प्रकार के सामाजिक आन्दोलनों का विस्तृत विवेचन किया जा सकता है। फिर भी हम पहले राजस्थान प्रान्त से सम्बन्धित तीन अत्यन्त महत्वपूर्ण आन्दोलनों -किसान, जनजातीय एवं पर्यावरण के सन्दर्भ में चर्चा करेंगे और अध्याय के अन्तिम भाग में अन्य समाज सुधारक आन्दोलनों पर संक्षिप्त टिप्पणियां प्रस्तुत करेंगे।

1. राजस्थान में बिजौलिया का किसान आन्दोलन– राजस्थान ही नहीं सम्पूर्ण भारत में किसान आन्दोलन एक सामान्य प्रघटना है। हमें ज्ञात है कि हमारा देश कृषि प्रधान देश है। भू स्वामित्व जोत, कृषि कार्य, कृषि मजदूरी एवं कृषि भूमि से सम्बन्धित लगान वसूलने की अलग-अलग व्यवस्थाएँ रही हैं। कृषक सम्बन्धों में संरचनात्मक परिवर्तन भी होते रहे हैं। ऐसी परिस्थितियों में कृषक असन्तोष एक अहम मुद्दा रहा है। हम यहां पर किसान आन्दोलन की चर्चा कर रहे हैं, लेकिन हमारी चर्चा का केन्द्र बिन्दु राजस्थान राज्य से सम्बन्धित बिजौलिया का किसान आन्दोलन है। यह आन्दोलन भारत के आजादी के आन्दोलन से जुड़ा हुआ है। अत: हम इस आन्दोलन को ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य से समझने का प्रयास करेंगे। हम यह भी समझेंगे कि इस आन्दोलन का स्रोत क्या था, इसके अगुआ कौन थे, प्रमुख मुद्दे क्या थे तथा आन्दोलन का परिणाम क्या रहा?

आन्दोलन का स्रोत– राजस्थान के किसान आन्दोलन की शुरूआत सन् 1899-1900 के समय पड़े महा अकाल के कारण हुई। महा अकाल से राजस्थान में मेवाड़ क्षेत्र के भीलवाड़ा जिले के बिजौलिया के किसानों पर संकट के बादल मंडराने लगे। उस समय ब्रिटिश शासकों के पास सत्ता थी। शासन व्यवस्था का संचालन जागीर प्रथा से हो रहा था। ऐसी स्थिति में किसानों पर दोहरी मार पड़ने लगी। एक तरफ प्राकृतिक प्रकोप अर्थात महा अकाल और दूसरी तरफ ठिकानेदारों द्वारा भारी लगान वसूली और शोषण। प्रभावित क्षेत्र से लोगों का पलायन प्रारम्भ हुआ। बिजौलिया क्षेत्र से पलायन के बाद शेष बचे किसानों ने शोषण और भारी लगान के विरोध में विद्रोह कर दिया। यह विद्रोह पड़ोस की जागीरों में भी फैल गया।

अग्रणी नेतृत्व– किसी भी आन्दोलन को प्रारम्भ करने से लेकर लक्ष्य प्राप्ति तक संचालन हेतु योग्य नेतृत्व की आवश्यकता होती है। आन्दोलन प्रारम्भ करने का विचार एवं रणनीति का सम्बन्ध अग्रणी नेतृत्व से होता है। बिजौलिया किसान आन्दोलन के जनक विजय सिंह पथिक थे। उनका वास्तविक नाम भूपसिंह गुर्जर था। विजय सिंह पथिक से पूर्व बिजौलिया के एक साधु सीताराम दास ने बिजौलिया किसान आन्दोलन का नेतृत्व किया था। जिस समय सीताराम दास ने यह आन्दोलन प्रारम्भ किया उस समय विजय सिंह पथिक (भूपसिंह गुर्जर) टाटगढ़ के किले में नजरबंद थे। क्योंकि 1915 के लाहौर षड्यन्त्र में सम्मिलित थे। मूलरूप से देश के स्वतन्त्रता आन्दोलन में सक्रिय होने के कारण उन्हें नजरबन्द कर दिया था। इसी दौरान उन्होंने अपना असली नाम भूपसिंह गुर्जर से दूसरा नाम विजयसिंह पथिक रखा। वेश बदल दिया और टाटगढ़ किले से फरार होकर चित्तौड़गढ़ क्षेत्र में आ गए। बिजौलिया में किसान आन्दोलन की शुरूआत करने वाले सीताराम दास ने विजयसिंह पथिक से सम्पर्क किया। पथिक को बिजौलिया आन्दोलन का नेतृत्व सम्भालने के लिए आमंत्रित किया। विजय सिंह पथिक 1916में बिजौलिया पहुंचे और आन्दोलन की कमान संभाली। बिजौलिया के किसानों को एकजुट कर तत्कालीन सामंती व्यवस्था के विरुद्ध जनचेतना जागृत की। माणिक्यलाल वर्मा भी पथिक के सम्पर्क में आएअ ौरि बजौलियाम ंे स ामंतीश ोषणए वंउ त्पीड़नके ि वरोधम ंे किसानों को जागरूक किया।

इस प्रकार बिजौलिया किसान आन्दोलन के अग्रणी नेतृत्व में सीताराम दास, विजय सिंह पथिक और माणिक्यलाल वर्मा प्रमुख थे। विजय सिंह पथिक की भूमिका अधिक उल्लेखनीय मानी जाती है।

प्रमुख घटनाक्रम– ब्रिटिश शासनकाल में जागीर प्रथा का प्रचलनअ ौरस ामन्तशाहीच रमप रथ ी।अ ान्दोलनके घ टनाक्रमम ंे प्राकृतिक प्रकोप के साथ ठेकेदारों द्वारा किसानों का शोषण करना प्रमुख था। किसानों में जागृति उत्पन्न कर उन्हें संगठित करने के प्रयास हुए। वैसे तो तत्कालीन परिस्थितियों से किसानों पर दोहरा संकट आ गया। ऐसी दशा में मालगुजारी की भारी मात्रा में वसूली से किसान परेशान हो रहे थे। विजय सिंह पथिक ने प्रत्येक गांव में किसान पंचायत की शाखाएँ खोली। किसान पंचायतों के माध्यम से भूमिकर अधिभार एवं किसानों को बेगार से मुक्त करवाना आन्दोलन का प्रमुख उद्देश्य था। किसान पंचायतों ने भूमिकर नहीं देने का निर्णय किया। बिजौलिया किसान आन्दोलन अन्य क्षेत्रों के किसानों के लिए भी प्रेरणा का स्रोत बन गया।

ऐसा उल्लेख है कि किसानों से 84 प्रकार के कर वसूले जा रहे थे। साहूकार भी किसानों का शोषण कर रहे थे। क्योंकि साहूकारों को जमींदारों का सहयोग एवं संरक्षण मिल रहा था, लेकिन किसान आन्दोलन निरंतर सशक्त होता रहा। विजय सिंह पथिक के प्रयासों से 1920 में अजमेर में राजस्थान सेवा संघ की स्थापना हुई। इससे आन्दोलन की गति तीव्र हो गयी। आन्दोलन प्रभावी हो गया। ब्रिटिश सरकार किसान आन्दोलन के अग्रणी नेताओं और संगठन से वार्ता को तैयार हो गयी। वार्ता के लिए राजस्थान के ए.जी.जी. हालैण्ड को नियुक्त

किया। ब्रिटिश सरकार से प्रतिनिधि ने किसान पंचायत बोर्ड और राजस्थान सेवा संघ से वार्ता की। शीघ्र ही दोनों पक्षों में समझौता हो गया किसानों की अभूतपूर्व विजय हुई।

किसान आन्दोलन का परिणाम– बिजौलिया से प्रारम्भ हुआ किसान आन्दोलन अनेक क्षेत्रों में फैला। पड़ौसी क्षेत्र बेगूं में भी आन्दोलन तीव्र हो गया था। जैसा कि घटनाक्रम में वर्णित है कि किसान आन्दोलन का परिणाम किसानों के लिए अनुकूल रहा। किसानों की अनेक मांगें स्वीकार कर ली गई थी। मुख्य रूप से जो 84 प्रकार के कर किसानों से वसूले जा रहे थे। उनमें से 35 लागतें माफ कर दी गई। शोषण करने वाले अनेक अधिकारियों को भी बर्खास्त कर दिया था। किसानों को जमींदारों के शोषण, दमन तथा लगान के बढ़ते बोझ से काफी राहत मिली, लेकिन आन्दोलन को अन्य क्षेत्रों में भी उग्र होता हुआ देखकर तत्कालीन मेवाड़ सरकार ने विजयसिंह पथिक को गिरफ्तार कर लिया था। पांच वर्ष की सजा के बाद उन्हें 1927 में जेल से रिहा किया।

बिजौलिया का किसान आन्दोलन देश के स्वतंत्रता आन्दोलन के साथ चलने वाला एक महत्वपूर्ण आन्दोलन हो गया। किसान आन्दोलन के सन्दर्भ में यह एक अत्यन्त प्रभावी एवं सफल आन्दोलन था।

राजस्थान में जनजातीय आन्दोलन : भगत आन्दोलन

सामान्य पृष्ठभूमि– किसान आन्दोलन के समान जनजातीय आन्दोलन भी सामाजिक परिवर्तन के कारक के रूप में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। अब तक हमें यह तो ज्ञात हो गया कि कोई भी सामाजिक आन्दोलन किसी विशिष्ट सामाजिक परिस्थिति के कारण उत्पन्न होता है। जनजातीय आन्दोलन की विवेचना करने से हमें यह स्पष्ट हो जायेगा कि वृहद समाज की संरचना में प्रत्येक घटक का उल्लेखनीय स्थान होता है। जनजातीय समुदाय भी वृहद समाज की संरचना का एक अंग है, लेकिन यह समुदाय किन्हीं विशिष्टताओं के कारण अपनी एक पहचान भी रखता है। इसलिए जनजातीय आन्दोलन का नेतृत्व इसके स्रोत आन्दोलन के कारण प्रमुख मुद्दे एवं सम्बन्धित घटनाक्रम भी अपने आप में विशिष्ट हैं।

जब हम सामान्य परिप्रेक्ष्य से जनजातीय आन्दोलन की चर्चा करते हैं तो हमारे देश में ऐतिहासिक घटनाक्रम के आधार पर जनजातीय आन्दोलन को तीन खण्डों में विभक्त किया जा सकता है। के.एस. सिंह एक मानवशास्त्री हैं। उन्होंने कालखण्ड के आधार पर पहला खण्ड 1795 से 1860 तक बताया जो कि जनजातीय आन्दोलन की पृष्ठभूमि तैयार करने वाला था। अर्थात् भारत में ब्रिटिश शासन की स्थापना हुई थी। जनजातीय समुदाय भी प्रभावित होने लगा। के.एस. सिंह के अनुसार दूसरा खण्ड 1860 से 1920 तक का है। इस अवधि में भारत में उपनिवेशवाद की जड़ें बहुत मजबूत हो गई। ब्रिटिश शासन की जनजातीय समुदाय के प्राकृतिक आवास अर्थात् जंगल और जंगल की जमीन के प्रति जो नीतियां थीं, उनसे इस समुदाय में असंतोष उत्पन्न हुआ। आन्दोलन के लिए प्रेरित हुए। तीसरे खण्ड में ब्रिटिश शासन के समय 1920 से लेकर स्वतंत्रता प्राप्ति तक जो नीतियां क्रियान्वित हुई उनसे जनजातीय समुदाय में शोषण का विरोध हुआ। यह भी उल्लेखनीय है कि विभिन्न कालखण्डों में अन्य समाज सुधार आन्दोलन हुए। इनके साथ ही जनजातीय समुदाय में भी सुधारवादी आन्दोलन हुए।

इस प्रकार जनजातीय समुदाय में हुए आन्दोलनों को देखें तो मोटे रूप से दो प्रकार के आन्दोलन हैं। एक वो आन्दोलन जो या तो जमीन एवं जंगल के मुद्दों पर आधारित हैं और दूसरे वो आन्दोलन जो जनजातीय समाज में प्रचलित सामाजिक बुराइयों को समाप्त करने के मुद्दों पर आधारित थे। हम चर्चा करेंगे सामाजिक बुराइयों को त्यागने के मुद्दे पर आधारित राजस्थान के भगत आन्दोलन की।

भगत आन्दोलन का स्रोत एवं नेतृत्व– भगत आन्दोलन भी तत्कालीनस ामाजिक-राजनैतिकप रिस्थितियोंके क ारणप ारम्भह ुआ था। इस आन्दोलन को भी दो अत्यन्त महत्वपूर्ण स्रोतों के आधार पर समझाया जा सकता है। पहला स्रोत सामाजिक-धार्मिक एवं सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य से महत्वपूर्ण है। इसका तात्पर्य है जनजातीय समुदाय के लोगों का उद्धार करना। राजस्थान और गुजरात की सीमा पर जो जनजातीय समुदाय के लोग हैं उनका सामाजिक-धार्मिक एवं सांस्कृतिक दृष्टिकोण से उद्धार करना। बुरी आदतों की मुक्ति और धार्मिक-सांस्कृतिक उत्थान को बढ़ाना। विशेष रूप से मांसाहार का त्याग, मद्यपान का त्याग, सभी प्रकार के व्यसनों से मुक्ति और केवल शाकाहार अपनाना।

भगत आन्दोलन का दूसरा स्रोत ब्रिटिश शासन की दमनकारी नीतियां तथा स्थानीय शासकों द्वारा शोषण। दक्षिण राजस्थान के बांसवाड़ा, डूंगरपुर और कुशलगढ़ क्षेत्र के जनजातीय समुदाय विशेष रूप से भील जनजाति के लोगों में अपने शोषण, दमन और बेगार के विरोध में सामूहिक चेतना की जागृति, विरोध एवं आन्दोलन करना।

कुछ प्रमुख सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक दशाओं का उल्लेख भगत आन्दोलन के स्रोत के सन्दर्भ में किया। अब हम इस आन्दोलन के अग्रणी नेतृत्व अर्थात् इसको प्रारम्भ करवाने में प्रमुख भूमिका का निर्वहन करने वाले, आन्दोलन के अगुआ के बारे में चर्चा करेंगे।

राजस्थान का जनजातीय आन्दोलन जिसे भगत आन्दोलन कहा जाता है। उसको प्रारम्भ कर संचालित करने वाले गोविन्द गुरु थे। गोविन्द गुरु बंजारा समुदाय के थे। दक्षिणी राजस्थान में डूंगरपुर के पास वेदसा नाम के स्थान से थे। इन्हीं गोविन्द गुरु ने 19वीं सदी के अन्त में भगत आन्दोलन चलाया था। आन्दोलन का मुख्य क्षेत्र बांसवाड़ा, पंचमहल एवं डूँगरपुर था।

गोविन्द गुरु जनजातीय समुदाय के लोगों में जागृति उत्पन्न कर उनका धार्मिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से उत्थान करना चाहते थे। ऐसा कहा जाता है कि गोविन्द गुरु ने जनजातीय समुदाय के लोगों को हवन करना सिखाया जिसे धूणी कहा जाता था। सन् 1903 में गोविन्द गुरु ने ही

मानगढ़ की पहाड़ी पर मुख्य धूणी की स्थापना की थी। समुदाय के लोगों में सुसंस्कारों की सीख देने के लिए उन्होंने ने मांसाहार त्यागना, नशामुक्ति, नियमित स्नान करना, हवन करना, पवित्र रहना, शाकाहार अपनाना आदि पर बल दिया।

जनजातीय समुदाय के जिन लोगों ने गोविन्द गुरु को अपना गुरु स्वीकार किया वे सभी उनके कट्टर अनुयायी हो गए। उनकी अलग पहचान बनी। उन्हें भगत के नाम से ही जाना जाने लगा जैसे भगत भील, सामान्य भील (जो भगत नहीं), 'उजला भील' अर्थात् जो नियमित स्नान करता है, हवन करता है, शाकाहारी है। दूसरा जो इसे नहीं अपनाता उसे 'मैला भील' कहा जाता था। गोविन्द गुरु ने अपने प्रेरणादायी उपदेशों से जनजातीय समाज में बहुत बड़ा परिवर्तन लाने का प्रयास किया। इसी को भगत आन्दोलन कहते हैं।

भगत आन्दोलन के प्रमुख उद्देश्य– अब तक के विवेचन से यह तो स्पष्ट हो गया कि भगत आन्दोलन के अग्रणी गोविन्द गुरु थे। यह आन्दोलन राजस्थान के दक्षिण क्षेत्र, विशेष रूप से बाँसवाड़ा, डूँगरपुर, कुशलगढ़ एवं सीमावर्ती राज्य गुजरात के पंचमहल तक सीमित रहा। आन्दोलन का केन्द्र बिन्दु जनजातीय समुदाय विशेष रूप से भील जनजाति था। इस आन्दोलन के मोटे रूप से दो उद्देश्य थे। पहला जनजातीय समुदाय का धार्मिक एवं सांस्कृतिक उत्थान एवं दूसरा उद्देश्य ब्रिटिश शासकों एवं स्थानीय शासकों द्वारा किए जा रहे शोषण, दमन एवं बेगार के विरुद्ध आन्दोलन करना। जनजातीय समुदाय के लोगों को राहत पहुंचाना।

भगतअ ान्दोलनक ोस शक्तब नानेके ि लयेग ंवके स् तरप र सामाजिक-धार्मिक संगठन की स्थापना करना भी इसका एक उद्देश्य था। इस कार्य के लिए गोविन्द गुरु ने गांव स्तर की इकाई बनायी जिसे सम्प सभा कहा था।

ब्रिटिश शासकों के समक्ष एक 33 सूत्रीय मांगपत्र भी रखा गया। गोविन्द गुरु ने 1910 में इस कार्य हेतु अपने अनुयायियों को प्रेरित किया। न्याय के लिये संघर्ष करना।'बेट बेगार' से मुक्ति दिलाना अर्थात बिना किसी पारिश्रमिक दिये जबरदस्ती करके श्रम करवाने से मुक्ति।

आन्दोलन से सम्बन्धित मुख्य घटनाक्रम– भगत आन्दोलन से सम्बन्धित घटनाक्रम भी मोटे रूप से दो अलग-अलग परिप्रेक्ष्य में देखे जा सकते हैं। जैसा कि आन्दोलन के उद्देश्यों में स्पष्ट किया है कि पहला उद्देश्य धार्मिक-सांस्कृतिक उत्थान से सम्बन्धित है तो इससे जुड़े हुए घटनाक्रम को भी हम इसी सन्दर्भ में समझने का प्रयास करेंगे। इसी प्रकार भगत आन्दोलन का दूसरा प्रमुख उद्देश्य ब्रिटिश शासकों की शोषण एवं दमनकारी नीतियों एवं कृत्यों का विरोध करने के सन्दर्भ में है। इस आधार पर हम दूसरे सन्दर्भ के घटनाक्रम का उल्लेख भी करेंगे। परन्तु यहां पर यह भी स्पष्ट हो जाना चाहिए कि दोनों ही प्रकार के उद्देश्य के परिप्रेक्ष्य में भिन्नता होते हुए भी इनके घटनाक्रमों में आपस में तालमेल भी दिखाई देता है।

भगत आन्दोलन से सम्बन्धित महत्वपूर्ण घटना 1890 में घटित हुई। उस समय यह आन्दोलन एक सुधारवादी आन्दोलन के रूप में था। प्रारम्भिक अवस्था में जनजातीय समुदाय के लोगों को समझाकर बुराइयों को त्याग कर अच्छाइयों को अपनाने के प्रयास हुए। धीरे-धीरे सुधारवादी प्रयास आगे बढ़े। गोविन्द गुरु के अनुयायियों की संख्या में बढ़ोतरी होने लगी।

सन् 1903 में मुख्य धूणी की स्थापना भी उल्लेखनीय घटना है। गोविन्द गुरु ने इसी वर्ष मानगढ़ की पहाड़ी पर इस धूणी को स्थापित किया। मानगढ़ का यह स्थान आकर्षण का केन्द्र बन गया। इसी स्थान पर सुधारवादी उपदेश होते थे। इसी के साथ तत्कालीन ब्रिटिश सरकार की नीतियों की समीक्षा भी होती थी।

ब्रिटिश सरकार की दमनकारी नीतियों के विरुद्ध भील समुदाय के लोग एक जुट हो गये। गोविन्द गुरु इस समुदाय के मार्गदर्शक एवं प्रेरणा स्रोत हो गए। सन् 1910 में अपने गुरु की प्रेरणा से भील समुदाय के लोगों ने एक 33 सूत्रीय मांग पत्र तैयार किया। इस मांग पत्र में मुख्य रूप से जबरन श्रम करवाने का विरोध, जनजातीय समुदाय पर लादे गये भारी भरकम करों की समाप्ति, लोगों को प्रताड़ित किये जाने का विरोध। गोविन्द गुरु के अनुयायियों के प्रति दमनकारी व्यवहार का विरोध, बेट बेगार (बिना पारिश्रमिक के जबरन श्रम) की समाप्ति, ब्रिटिश शासन से मुक्ति की मांगें प्रमुखता से सम्मिलित की गई।

गोविन्द गुरु के नेतृत्व में न्याय के लिये संघर्ष और गंभीर हो गया। दूसरी तरफ ब्रिटिश शासकों ने तथा स्थानीय क्षेत्रीय शासकों ने जनजातीय समुदाय एवं गोविन्द गुरु के अनुयायियों की मांगों को अस्वीकार कर दिया। ऐसा कहा जाता है कि भगत आन्दोलन को तोड़ने और कुचलने का हर संभव प्रयास ब्रिटिश शासकों ने किया। भील समुदाय के लोगों में आक्रोश बढ़ता गया। ऐसा भी कहा जाता है कि गोविन्द गुरु के आक्रोशित अनुयायियों ने मानगढ़ के पास तत्कालीन सन्तरामपुर राज्य के एक पुलिस स्टेशन पर हमला कर दिया इस हमले में एक पुलिस इन्सपेक्टर की मृत्यु हो गई थी। ब्रिटिश शासक और कठोर हो गये तथा आन्दोलन को दबाने का पूरा प्रयास करने लगे।

भगत आन्दोलन का केन्द्रीय स्थल मानगढ़ ही थी। मानगढ़ की पहाड़ी पर सैकड़ों लोग देशी हथियारों से लैस होकर एकत्रित हो गये। मानगढ़ पहाड़ी पर एकत्र लोगों के साथ ब्रिटिश शासकों ने वार्ता भी की थी। ब्रिटिश शासक मानगढ़ पहाड़ी को खाली करवाना चाहते थे। लेकिन आन्दोलनकारियों ने शासकों की बात को ठुकरा दिया। वार्ता विफल हो गई। आन्दोलन हिंसक हो गया। आन्दोलन कारियों ने मानगढ़ को किले का रूप दे दिया। सभी के हाथों में देशी हथियार, तलवारें और बन्दूकें थीं।

ब्रिटिश पुलिस तथा मेवाड़ भील कोर के सिपाहियों ने मानगढ़ को चारों तरफ से घेर लिया। ऐसा कहा जाता है कि ब्रिटिश शासकों ने आन्दोलनकारियों को कुचलने के लिये भरपूर युद्ध सामग्री का प्रबन्ध किया।म ानगढ़प हाड़ीप रत थाि नकटक ोप हाड़ीच ोटियोंप रय ुद्ध सामग्री पहुंचाने के लिए गधों और खच्चरों का उपयोग किया।

आन्दोलनकारियों को डराने, धमकाने और भयभीत करने के लिए ब्रिटिश पुलिस ने हवाई फायर किए। लेकिन आन्दोलनकारी भी मुकाबला करने पर उतारू थे। वो और अधिक उग्र और आक्रमक हो गए। नरसंहार प्रारम्भ हुआ। सैकड़ों की संख्या में आन्दोलनकारी गोलियों के शिकार हुए। निरन्तर गोलीबारी होती रही। लगभग 1500 आन्दोलनकारियों की मृत्यु हो गई। अनेक घायल हो गये। ऐसा भी कहा जाता है कि करीब 900 आन्दोलनकारियों को मानगढ़ से जिन्दा पकड़ लिया। उन्हें मानगढ़ छोड़ कर चले जाने को कहा, लेकिन आन्दलोनकारी डटे रहे अन्त में उन सभी को गोलियों से मार दिया।

मानगढ़ पहाड़ी पर हुआ नरसंहार जलियाँ वाले बाग की घटना की तरह था। कुछ लोगों का मानना है कि नरसंहार से पूर्व आन्दोलनकारियों को चेतावनी दी गई थी कि वे 15 नवम्बर 1913 तक मानगढ़ खाली कर दें। लेकिन आन्दोलनकारियों ने इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया। इसलिए आन्दोलन ने खूनी संघर्ष का रूप ले लिया। यह खूनी संघर्ष निरंतर चलता रहा। इसकी समाप्ति के बारे में उल्लेख है कि निरन्तर गोलीबारी हो रही थी, लाशों के ढेर लगने लगे थे, उस दौरान ब्रिटिश अधिकारियों का ध्यान एक महिला की लाश की तरफ गया। एक बालक अपनी मृत माँ की छाती पर लगकर स्तनपान करने का प्रयास कर रहा था। जब ब्रिटिश अधिकारियों ने इस दृश्य को देखा तो कहते हैं कि इसके बाद गोलीबारी बन्द कर दी। आन्दोलन के प्रेरणास्रोत गोविन्द गुरु को भी हिरासत में ले लिया। उन्हें आजीवन कारावास की सजा दी तथा सन 1919 तक वे हैदराबाद जेल में रहे। जेल से रिहा होने के बाद भी उन पर पाबन्दी लगा दी थी कि वे उन स्थानों पर नहीं जायेंगे जहां पर उनके अनुयायी थे। गोविन्द गुरु अपने जीवनकाल के अन्तिम दौर में गुजरात के कम्बोई में लिम्बड़ी के पास रहे और सन 1931 में उनकी मृत्यु हो गई।

भगत आन्दोलन का प्रभाव– अनेक दृष्टि से भगत आन्दोलन एक सफल जनजातीय आन्दोलन था। इस आन्दोलन को सकारात्मक दृष्टि से देखें तो ज्ञात होता है कि सामाजिक-धार्मिक अथवा सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तन लाने में उल्लेखनीय योगदान रहा। भगत आन्दोलन के प्रभाव दक्षिण राजस्थान के जनजातीय समुदाय में खान-पान, रहन-सहन, आचार-विचार में आमूलचूल परिवर्तन हुआ। गोविन्द गुरु के जो अनुयायी बने वे अपने आपको सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टि से समाज में श्रेष्ठ समझते हैं। वृहद समाज और जनजातीय समुदाय के बीच अन्तराल समाप्त करने में भगत आन्दोलन ने ही पहल की थी।

इसी प्रकार जिस समय पूरे देश में स्वतंत्रता के लिए संघर्ष चल रहा था उस समय जनजातीय समुदाय ने जागृति उत्पन्न कर राष्ट्र की मुख्य धारा के साथ जोड़ने में भगत आन्दोलन ने अत्यन्त ही सकारात्मक वातावरण उत्पन्न किया। ब्रिटिश शासन की दमनकारी नीतियों का विरोध जनजातीय समुदाय के शोषण का विरोध, बेगार लेने का विरोध, जंगल और जमीन पर अधिकार से सम्बन्धित नीति का विरोध तथा देश को ब्रिटिश शासन से मुक्त करवाने के लिए आन्दोलन में सक्रिय भागीदारी, भगत आन्दोलन के सकारात्मक प्रभाव के रूप में देखा जाता है। इन सभी प्रभावों के साथ सबसे महत्वपूर्ण प्रभाव राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ करने के सम्बन्ध में है। भगत आन्दोलन ने जनजातीय समुदाय को राष्ट्र की मुख्य धारा के साथ जोड़कर राष्ट्रीय एकता तो सुदृढ़ बनाए रखा।

राजस्थान के पर्यावरण आन्दोलन (खेजड़ली)

पर्यावरण संरक्षण एवं पर्यावरण समृद्धि भारतीय परम्पराओं का महत्वपूर्ण पहलू है। प्राचीन काल से ही प्राकृतिक संसाधनों के प्रति आदर भाव का उल्लेख मिलता है। धीरे-धीरे जब जनसंख्या वृद्धि होने लगी औद्योगिक की प्रक्रिया तीव्र होने लगी तो प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव बढ़ता गया। इनका अप्रत्याशित दोहन होने लगा। ऐसी दशा में पर्यावरण को बचाना विकास प्रक्रिया के लिए एक पूर्व आवश्यकता बनी। पूरे विश्व में पर्यावरण आन्दोलन प्रारम्भ हुए। पर्यावरण आन्दोलनों को नए आन्दोलन का नाम दिया। भारत में भी पर्यावरण आन्दोलन होते रहे हैं, जिन्हें पर्यावरणीय आन्दोलन कहा जाता है वे वास्तव में लोगों के प्राकृतिक संसाधनों पर अधिकारों से सम्बन्धित आन्दोलन थे। समाजशास्त्रीय दृष्टि से इन आन्दोलनों को प्राकृतिक संसाधनों के लिए लोगों के आन्दोलन भी कहा जाता है। अर्थात प्राकृतिक संसाधनों पर अधिकार, उनके दोहन, संरक्षण एवं सुरक्षा से सम्बन्धित आन्दोलनों को ही सामान्य रूप से पर्यावरणीय आन्दोलन कहा जाता है। अब हम चर्चा करेंगे राजस्थान में पर्यावरण आन्दोलन की जिसे खेजड़ली का आन्दोलन कहा जाता है।

खेजड़ली आन्दोलन का स्रोत– हम जिस आन्दोलन की चर्चा कर रहे हैं उसका सम्बन्ध खेजड़ली नाम के एक गांव से है। राजस्थान के जोधपुर शहर के दक्षिण पूर्व में 26किलोमीटर की दूरी पर यह गांव बसा हुआ है। इस गांव का नाम खेजड़ी नाम के वृक्ष पर ही रखा गया था। ऐसा माना जाता है कि इस गांव के आस-पास खेजड़ी के असंख्य वृक्ष थे। खेजड़ी के वृक्ष को बहुत पवित्र माना जाता है इसलिए इस वृक्ष को पुराने समय से ही बहुत आदर भाव से देखा जाता रहा। इस वृक्ष की बहुआयामी उपयोगिता भी रही है।

खेजड़ली का आन्दोलन सन् 1730 में इसी गाँव में हुआ था। इस आन्दोलन को प्रथम चिपको आन्दोलन के नाम से भी जाना जाता है। खेजड़ी के हरे वृक्षों को बचाने के लिए इस आन्दोलन की अग्रणी एक साहसी महिला थी। उसका नाम था अमृता देवी। उनकी तीन बेटियां थीं, आशु, रतनी और भागुबाई। आन्दोलन की अगुआ अमृता देवी थी। इनके नेतृत्व में खेजड़ली क्षेत्र के अनेक लोग, जो विश्नोई समुदाय से थे, साथ जुड़ गये। यह आन्दोलन हरे वृक्षों और जंगली जानवरों की सुरक्षा के लिए मानव के बलिदान की परम्परा का एक उदाहरण है।

अमृतादेवी की दृढ़ता और साहस की घटना से इस आन्दोलन की शुरूआत हुई। खेजड़ी के हरे वृक्ष के लिपट कर स्वयं का सिर कटवाने वाली सशक्त महिला की प्रेरणा से विश्नोई समुदाय के 294 पुरुषों और 69 महिलाओं ने अर्थात विश्नोई समुदाय के कुल 363 सदस्यों ने अपने जीवन

का बलिदान कर दिया।

प्रमुख घटनाक्रम– खेजड़ली आन्दोलन की सबसे प्रमुख घटना सितम्बर 1730 में घटित हुई। इतिहास के अनुसार भारतीय पंचांग में भाद्रप्रद माह के शुक्ल पक्ष की दसवीं तिथि पर्यावरण सुरक्षा के लिए बलिदान की तिथि मानी जाती है। इस तिथि को मंगलवार था। अमृता देवी खेजड़ली गाँव में अपनी तीनों बेटियों के साथ अपने घर में थी। अचानक अमृता देवी को ज्ञात हुआ कि जोधपुर महाराजा के यहां से अनेक लोग खेजड़ली गांव में आ गये। लोगों का यह एक बहुत बड़ा समूह था जोधपुर महाराजा के मंत्री की आज्ञा से ये लोग वहाँ एक विशेष प्रयोजन से आए थे। प्रयोजन था खेजड़ी के हरे वृक्षों की वृहद स्तर पर कटाई करना। हरे वृक्षों को काटकर उनकी लकड़ियों को चूना बनाने के लिये काम में लेना। यह चूना जोधपुर महाराजा द्वारा एक नया महल निर्मित करने के लिए तैयार करना था। खेजड़ी के वृक्ष सहज रूप से उपलब्ध थे। यद्यपि यह क्षेत्र रेगिस्तान का ही एक भाग था लेकिन खेजड़ी के असंख्य वृक्षों के कारण इस क्षेत्र में बहुत हरियाली थी।

राजदरबारके अ ादेशस`अ ायेल ोगख`जड़ीके ह रेव ृक्षोंक ो काटकर ले जाने के प्रयोजन से खेजड़ली गांव में थे। उस समय अभय सिंह जोधपुर के महाराजा थे। अमृता देवी ने हरे वृक्ष काटने का पुरजोर विरोध किया।

विश्नोई समुदाय की धार्मिक मान्यता के अनुसार एक तो खेजड़ी का वृक्ष बहुत पवित्र होता है। दूसरा खेजड़ी के हरे वृक्ष को काटने पर पूर्ण सामाजिक प्रतिबन्ध था। अमृता देवी ने भी धार्मिक मान्यता के आधार पर तर्क के साथ हरे वृक्षों को काटने का विरोध किया। अमृता देवी के तार्किक विरोध को देखकर सामन्ती इरादों से आये समूह ने कुछ देर के लिए पुनर्विचार किया। अमृता देवी के समक्ष एक प्रस्ताव रखा कि यदि हरे वृक्ष काटने से नुकसान होता है तो वे लोग अपना इरादा बदल देंगे। नुकसान नहीं करेंगे यदि उन्हें रिश्वत की राशि मिल जाती है तो अर्थात हरे वृक्षों को बचाने के बदले अमृता देवी को धनराशि चुकानी होगी अन्यथा होने वाले नुकसान के लिये तैयार रहें। अमृता देवी ने इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया। अमृता देवी ने कहा कि इस प्रकार के सौदेबाजी एक कलंक है। धार्मिक आस्था के अनुसार यह कृत्य निंदनीय है।

अमृता देवी ने दृढ़ निश्चय कर लिया कि किसी भी परिस्थिति में खेजड़ी के एक भी हरे वृक्ष को नहीं कटने देगी। इसके बदले उसे अपना बलिदान भी देना है तो वह तैयार है। अमृता देवी के शब्द कुछ इस प्रकार अभिव्यक्त किए गए हैं कि–

'सर सांट्ये रूंख रहे तो भी सस्तो जाण' अर्थात् मानव का सिर कट जाये लेकिन उसके बदले में वृक्ष बच जाता है तो भी सस्ता है। हरे वृक्षों की रक्षा के लिए स्वयं के बलिदान का प्रस्ताव जीवन का सर्वोच्च मूल्य है।

अमृता देवी ने अपने जीवन इस सर्वोच्च मूल्य के अनुसार अपना बलिदान देना स्वीकार किया। उसके साथ उसकी तीनों बेटियों ने भी हरे वृक्षों को बचाने के लिए अपने जीवन का त्याग कर देना का निश्चय कर लिया। वे तीनों युवतियाँ अमृता देवी के साथ ही एक-एक वृक्ष को अपनी बाहों में लपेट कर उनसे चिपक गई। महाराजा के वहां से आये उनके सेवकों ने अमृता देवी और उनकी तीनों बेटियों को वृक्षों के साथ ही काट दिया।

अमृता देवी और उसकी बेटियों के बलिदान का समाचार जंगल में आग के समान चारों और फैल गया। विश्नोई समुदाय के लोग एकत्र होने लगे। समुदाय के 83 गांवों में सूचना हो गई। सभी ने एक साथ मिलकर सामूहिक कार्यवाही का निर्णय लिया।

एक वृक्ष पर एक विश्नोई समुदाय का सदस्य लिपट गया। इस प्रकार एक-एक करके वृक्ष कटने लगे उनके साथ मानवीय बलिदान हो रहा था। विश्नोई समुदाय के लोग स्वेच्छा से अपना बलिदान दे रहे थे। बूढ़े, युवा, बालक, महिला, युवतियाँ, नवविवाहित युवक-युवतियाँ भी पीछे नहीं रहीं।

एक इरादतन उपद्रव सा दृश्य था। विश्नोई समुदाय ने हरे वृक्ष काटने वालों के समक्ष बहुत बड़ी चुनौती खड़ी कर दी। वृक्ष काटने वाले समूह अपने कार्य को अधूरा छोड़कर जोधपुर चले गए और महाराजा के समक्ष सम्पूर्ण घटनाक्रम का वर्णन किया। अब तक कुल 294 पुरुष और 69 महिलाएं शहीद हो चुके थे। ये सभी विश्नोई समुदाय के थे। बूढ़े प्रौढ़,य ुवा,य ुवतियाँ,ि ववाहितअ विवाहित,अ मीरग रीबस भीक ा प्रतिनिधित्व हो गया।

आन्दोलन का प्रभाव– हरे वृक्षों को बचाने के लिए किस प्रकार से लोगों ने अपने प्राण न्यौछावर कर दिए। इस सम्पूर्ण घटना को सुनकर जोधपुर के तत्कालीन महाराज अभय सिंह ने अपने ही अधिकारियों द्वारा किये गये कृत्य के प्रति अफसोस प्रकट किया। अपनी गलती को स्वीकारा, खेद प्रकट करते हुए ताम्र पत्र पर एक आदेश जारी किया। इस आदेश का कथ्य निम्न प्रकार था–

- विश्नोई गांवों की राजस्व सीमाओं के अन्दर सभी प्रकार के हरे वृक्षों की कटाई एवं जानवरों के शिकार को कठोरता से प्रतिबन्धित किया जाता है।
- यह भी आदेशित किया गया कि यदि भूल से कोई व्यक्ति उपर्युक्त आदेश का उल्लंघन करता है तो उसे राज्य द्वारा गंभीर रूप से दंडित किया जाएगा।
- इस प्रकार के घटनाक्रम के प्रभाव से शासक परिवार के किसी भी सदस्य ने विश्नोई गांवों में एवं उनके आस-पास के गांवों में कभी कोई शिकार नहीं किया।
- खेजड़ली आन्दोलन प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण-सुरक्षा के सम्बन्ध में एक उच्च आदर्श स्थापित करने वाली असाधारण घटना थी।

अन्य समाज सुधारक आन्दोलन

समाज में जब सामाजिक बुराइयों को समाज व्यवस्था के लिये

व्यवधान समझा जाता है तो सुधार की आवश्यकता होती है। यूं भी कह सकतेह ैं कि ज ब-जबभ ीस माज० यवस्थाम ें वकृतियाँउ त्पन्नह ोने लगती, तथा समाज का ढांचा विरोधाभासी व्यवहारों से प्रभावित होने लगता है तब सुधारवादी आन्दोलनों का जन्म होता है।

भारतीय समाज में भी समय-समय पर सुधारवादी आन्दोलन हुए हैं। समाज में सामाजिक कुरीतियाँ, सामाजिक बुराइयां, सामाजिक असमानताएँ, सामाजिक भेदभाव, अन्याय, शोषण आदि सामाजिक समस्याओं के विरुद्ध जनचेतना जागृत करने के जो आन्दोलन किए जाते रहे हैं उन आन्दोलनों को सुधारवादी आन्दोलन कहा गया। इन्हीं आन्दलनों के द्वारा तत्कालीन सामाजिक दशाओं, कुप्रथाओं, परम्पराओं तथा अंधविश्वासों को समाप्त कर नई व्यवस्था की स्थापना के लिये प्रयास होते रहे। यहाँ पर हम कुछ विशिष्ट सुधारवादी आन्दोलनों का संक्षिप्त ब्योरा प्रस्तुत करेंगे।

ब्रह्म समाज– यह आन्दोलन भारत में ब्रिटिश शासन की स्थापना के बाद प्रारम्भ हुआ। राजा राम मोहन राय ने 20 अगस्त 1828को ब्रह्म समाज की स्थापना की थी। राजाराम मोहनराय के दर्शन में रंगभेद, धर्म, सम्प्रदाय और जाति को कोई स्थान नहीं था। ये ही तत्व आन्दोलन के आधारभूत वैचारिक तत्व थे।

आन्दोलन की विशेषताएँ–

- मूर्ति पूजा और कर्मकाण्डों का विरोध।
- वेदान्त, उपनिषद और भगवद् गीता के सिद्धान्तों के अनुसार एकेश्वरवाद की स्थापना।
- जाति व्यवस्था की बुराइयों की समाप्ति करना।
- नारी के उद्धार को प्राथमिकता। सती प्रथा की समाप्ति
- बाल विवाह का विरोध एवं विधवा पुनर्विवाह का समर्थन।
- बहुर्विवाह का विरोध।
- देवेन्द्र नाथ टैगोर, ईश्वर चन्द्र विद्यासागर, अक्षय कुमार दत्त, केशवचन्द्र सेन आदि की भूमिका उल्लेखनीय थी।
- आन्दोलन की सक्रियता लगभग 30 वर्ष तक रही।

प्रार्थना समाज– इस आन्दोलन को भी राजा राम मोहन राय की विचारधारा के आधार पर प्रारम्भ किया गया था। सन् 1857 में मुम्बई में प्रार्थना समाज की स्थापना हुई। इस आन्दोलन का नेतृत्व केशवचन्द्र सेन ने किया। इनके साथ महादेव गोविन्द रानाडे ने भी इस आन्दोलन को आगे बढ़ाया।

प्रमुख विशेषताएँ–

- जाति प्रथा एवं बाल विवाह का विरोध करना।
- विधवा विवाह का समर्थन एवं नारी शिक्षा का प्रचार करना।
- जन साधारण के अधिक समीप होना।
- हिन्दूवादी कट्टरता एवं सामाजिक बुराइयों को समाप्त करना।

आर्य समाज– स्वामी दयानन्द सरस्वती ने 10 अप्रेल 1875 को मुम्बई में आर्य समाज की स्थापना की थी। उनका ध्येय वाक्य था 'वेदों की ओर लौट चलो'। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' में वेदों की व्याख्या एवं अपने वैचारिक दृष्टिकोण को स्पष्ट किया।

आर्य समाज आन्दोलन की विशेषताएँ–

- मानव-मानव के बीच बन्धुत्व की भावना को विकसित करना।
- स्त्री-पुरुष के बीच असमानता को दूर करना।
- समाज में सामाजिक न्याय की स्थापना के साथ प्रत्येक व्यक्ति को अपने गुणों और कर्म के आधार पर योग्यता अर्जित करने के अवसर उपलब्ध करवाना। सभी के प्रति प्रेम और स्नेह की भावना का विकास
- बहुदेववाद एवं मूर्ति पूजा का विरोध।
- बाल विवाह एवं जाति प्रथा का विरोध
- अन्तर्जातीय विवाह एवं विधवा विवाह को प्रोत्साहन
- स्त्रियों में शिक्षा का प्रचार-प्रसार करना।
- 'शुद्धि आन्दोलन' धर्म परिवर्तित कर लेने वाले हिन्दुओं को पुन: हिन्दू धर्म में लाना।
- सामाजिक, धार्मिक एवं राष्ट्रीय एकता स्थापित करना।

रामकृष्ण मिशन– रामकृष्ण मिशन की स्थापना स्वामी विवेकानन्द ने 1897 में की थी।

स्वामी विवेकानन्द ने अपने गुरु रामकृष्ण परमहंस की स्मृति में बंगाल राज्य के बेलूर में इस मिशन को स्थापित किया था। रामकृष्ण मिशन का दर्शन तथा गतिविधियाँ पूर्व एवं पश्चिमी संस्कृति के समन्वय को दर्शाता है। आध्यात्मिक मूल्य ही जीवन का मार्गदर्शन करते हैं ऐसी मान्यता थी।

रामकृष्ण मिशन आन्दोलन की विशेषताएँ–

- सबका स्वामी एक ईश्वर है। सभी धर्म अलग-अलग मार्ग उसे प्राप्त करने की बात करते हैं।
- जाति प्रथा का विरोध करना तथा ब्राह्मणों के अधिकारवाद का विरोध।
- मानवतावादी विचारों से जनकल्याण के कार्यक्रमों का संचालन
- छूआ-छूत का विरोध।
- जन सामान्य के जीवन में यूरोप और अमेरिका के अन्धे अनुकरण का विरोध।
- 'बहुजन हिताय: बहुजन सुखाय:' के आदर्श पर आधारित मानव सेवा के कार्य करना।

भारत के समाज सुधार के उद्देश्य से और भी अनेक आन्दोलन हुए हैं। जैसे-थियोसोफिकल सोसायटी के माध्यम से श्रीमती एनीबीसेन्ट ने नव जागरण, धर्मनिरपेक्षता, राष्ट्रीयता एवं विश्व बन्धुत्व की भावना को बढ़ाने के लिए आन्दोलन किया।

गोपाल कृष्ण गोखले ने 1905 में 'भारत सेवक समाज' के माध्यम से गरीब, निरक्षर लोगों के लिए स्त्री पाठशालाएं, विद्यालय,

कानूनी सहायता केन्द्र प्रारम्भ किए।

इसी प्रकार सन 1873 में महात्मा ज्योतिबा फुले ने महिलाओं की मुक्ति और शिक्षा पर ध्यान देने के लिए सत्यशोधक समाज की स्थापना की।

अल्पसंख्यक समुदायों में समाज सुधार आन्दोलन

भारत में मुसलमानों में आधुनिक शिक्षा का प्रचार-प्रसार करने तथा विश्व बन्धुत्व की भावना को उजागर करने के लिए आन्दोलन हुए। इनमें अहमदिया आन्दोलन, अलीगढ़ आन्दोलन, सर महमूद इकबाल द्वारा शुरू किया गया आन्दोलन और शेख अब्दुल हामिल शाह का आन्दोलन प्रमुख है।

भारत में पारसी समुदाय के निर्धन लोगों तथा महिलाओं को शिक्षित करने में सहायता के लिए चलाए गए कार्यक्रम आन्दोलन के रूप मेंह िथ` इ ममें` पारसीप`चायत'प/मुखह` इ सकेम ाध्यमस`प ारसी समुदाय के जटिल सामाजिक रीति-रिवाजों में सुधार लाने के प्रयत्न होते रहे हैं।

सिक्ख समुदाय में गुरुद्वारे के माध्यम से सामाजिक-धार्मिक सुधार के अनेक कार्यक्रम संचालित हुए जो समाज सुधार आन्दोलन के रूप में ही थे।

इस प्रकार भारत में सामाजिक परिस्थितियों के अनुसार जागृति उत्पन्न होती रही है। समाज में कुरीतियों, सामाजिक बुराइयों को समाप्त कर समाज में नैतिक मूल्यों की स्थापना और उनकी रक्षा के लिए आन्दोलन होते रहें। इन सभी आन्दोलनों के प्रभाव से हमारे देश में भी युगानुकूल परिवर्तन होते रहें। इसी के प्रभाव से भारतीय समाज की एक विशिष्ट वैश्विक पहचान सुदृढ़ होती रही।

महत्वपूर्ण बिन्दु

- जनसंचार और सामाजिक आन्दोलन की भूमिका सामाजिक परिवर्तन लाने में महत्वपूर्ण होती है।
- जनसंचार एक सामाजिक प्रक्रिया है, जिसके द्वारा सूचनाएँ एवं संदेश एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाये जाते है।
- स्रोत, संदेश तथा लक्ष्य जनसंचार के संरचनात्मक पक्ष हैं।
- इच्छित परिवर्तन लाने के लिए अथवा होने वाले परिवर्तन का विरोध करने के लिए सामूहिक प्रयास सामाजिक आन्दोलन है।
- बिजौलिया किसान आन्दोलन के जनक विजय सिंह पथिक (भूपसिंह गुर्जर) थे।
- किसान आन्दोलन के प्रभाव से किसानों को जमींदोरों के शोषण, दमन तथा लगान के बढ़ते बोझ से राहत मिली थी।
- भगत आन्दोलन जनजातीय समुदाय के धार्मिक एवं सांस्कृतिक उत्थान के साथ ब्रिटिश शासकों और स्थानीय शासकों द्वारा किए गए शोषण, दमन एवं बेगार के कारण गोविन्द गुरु द्वारा चलाया गया था।
- खेजड़ली का आन्दोलन प्राकृतिक संसाधनों अर्थात् खेजड़ी के वृक्षों एवं जंगली जानवरों के संरक्षण के लिए हुआ।
- खेजड़ली आन्दोलन की अगुआ अमृता देवी थी।
- भारतम`ंअ न्यस माजस ुधारअ ान्दोलनम ुख्यरू पस`स ामाजिक कुरीतियों, सामाजिक भेदभाव, अन्याय और शोषण के विरुद्ध हुए।

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

1. निम्न में कौन सी इकाई जनसंचार से सम्बन्धित है–
   (अ) समय (ब) संदेश
   (स) संस्था (द) समुदाय
2. निम्न में से कौन सा तत्व सामाजिक आन्दोलन से सम्बन्धित नहीं है–
   (अ) विचारधारा (ब) चमत्कारी नेतृत्व
   (स) संरचना (द) संगठन
3. सीताराम दास कौन से आन्दोलन से जुड़े थे?
   (अ) बिजौलिया (ब) भगत
   (स) खेजड़ली (द) आर्य समाज
4. भगत आन्दोलन का केन्द्र क्या था?
   (अ) टाटगढ़ (ब) मानगढ़
   (स) खेजड़ली (द) बिजौलिया

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न–

1. जन संचार का अर्थ क्या है?
2. जन संचार की प्रमुख इकाइयों के नाम लिखिए?
3. संदेश का अर्थ बताइए।
4. सामाजिक आन्दोलन का अर्थ बताइए।
5. सामाजिक आन्दोलन के किन्हीं दो तत्वों को बताइए।
6. बिजौलिया किसान आन्दोलन कब प्रारम्भ हुआ?
7. भगत आन्दोलन का संचालन किसने किया था?
8. खेजड़ली आन्दोलन का प्रमुख कारण क्या था?
9. ब्रह्म समाज की स्थापना किसने की थी?
10. स्वामी विवेकानन्द ने किस संस्था की स्थापना की?

लघूत्तरात्मक प्रश्न–

1. जनसंचार एवं सामाजिक परिवर्तन को समझाइए।
2. जनसंचार का महत्व बताइए।
3. जनसंचार के संरचनात्मक पक्ष को समझाइए।
4. बिजौलिया आन्दोलन का स्रोत क्या था, समझाइए।
5. बिजौलिया किसान आन्दोलन के परिणाम पर टिप्पणी लिखिए।
6. भगत आन्दोलन की पृष्ठभूमि बताइए।
7. भगत आनदोलन के प्रमुख उद्देश्य बताइए।
8. खेजड़ली आन्दोलन क्यों हुआ, कारण समझाइए?

9. खेजड़ली आन्दोलन का क्या प्रभाव पड़ा?
10. आर्य समाज की प्रमुख विशेषताएं बताइए।
11. रामकृष्ण मिशन की स्थापना के उद्देश्य समझाइए।

निबन्धात्मक प्रश्न–

1. जनसंचार के अवधारणात्मक पक्ष को समझाते हुए इसकी संरचना की विवेचना कीजिए।
2. सामाजिक आन्दोलन के प्रमुख तत्वों का वर्णन करिए।
3. बिजौलिया किसान आन्दोलन के घटनाक्रम की विवेचना कीजिए
4. खेजड़ली आन्दोलन की घटना का वर्णन कीजिए। इससे क्या संदेश मिला समझाइए।

उत्तरमाला

1. (ब) 2. (स) 3. (अ) 4. (ब)